शोध-मंथन Vol. VII No. 2, 2016 ISSN No. (P) 0976-5255, (e) 2454-339X

ICRJIFR
IMPACT FACTOR
3.8942

शोध मंथन

''अकबर के शासन काल में शिक्षा एवं साहित्य का विकास''

डॉ0 समन जहरा जैदी
प्रवक्ता– (स्ववित्तपोषित)
इतिहास विभाग
साहू राम स्वरूप म0 महाविद्यालय,बरेली
samanzehrazaidi@gmail.com

अकबर ने एक शासक के रूप में अपनी प्रजा की बौद्धिक और मानसिक उन्नति करना अपना कर्तव्य समझा। वह साहित्य तथा शिक्षा को प्रोत्साहन देना अपने राज्य का एक प्रमुख उद्देश्य समझता था। वह शिक्षा के मध्ययुगीन पिछड़ेपन को दूर करने के लिये आतुर था। सम्भवतः मुस्लिम इतिहास में पहली बार अकबर में हम एक मुसलमान शासक को हिन्दू और मुसलमान दोनों को समान रूप से शिक्षा देने के प्रति उत्सुक पाते हैं। उसी के शासन में हम हिन्दु और मुसलमानों को मदरसों और विद्यालयों में भी प्रथम बार एक साथ ही पढ़ते पाते हैं।[1] अकबर ने बच्चों की पढ़ाई में अत्याधिक रूचि ली। वह कहा करता था कि ''बच्चे अस्तित्व रूपी बाग की कोमलतम कलियाँ हैं उनसे प्यार करके हम जन्म देने वाले की प्रशंसा करते हैं।''[2]

अबुल फजल लिखते हैं–'' मकबत की प्रथा बच्चे के 4 वर्ष, 4 महीने और 4 दिन पूरे करने पर आयोजित की जाती थी।[3] अकबर ने प्रारम्भिक पाठशालाओं के पाठ्यक्रम को सुधारने में भी रूचि ली। उसने आदेश दिया कि प्रत्येक बालक को नैतिकता, गणित, कृषि, गृहशास्त्र, सरकारी नियमादि, चिकित्सा, तर्कशास्त्र, शारीरिक शिक्षा, परिमाणशास्त्र, धर्मशास्त्र, विज्ञान और इतिहास आदि पढ़ाए जायें।[4] भारतीय इतिहास, हिन्दी और हिन्दू दर्शन के अध्ययन पर भी सम्राट ने जोर दिया। संस्कृत की पाठशालाओं में व्याकरण, न्याय, वेदांत आदि पढ़ाए जाने का आदेश दिया गया था।[5] हिन्दी के प्रति उसकी रूचि का पता इस बात से चलता है कि उसने अपने पुत्रो को हिन्दी की शिक्षा देने का प्रबन्ध किया था। अपने पौत्र खुसरो को हिन्दू दर्शन की शिक्षा के लिये उसने शिवदत्त नामक विद्वान को नियुक्त किया था और पुत्र मुराद को उसने पुर्तगाली सिखाने के लिये मान्सरेट को रखा था। शिक्षा के मामले में वह धर्म भाषा आदि के आधार पर भेद–भाव नहीं करता था। शहजादो को फारसी, अरबी के साथ–साथ संस्कृत, हिन्दी तथा भारतीय सन्दर्भ की बातें भी सिखाई जाती थीं।[6] शहजादों की शिक्षा दीक्षा के प्रति अकबर बहुत सचेत रहता था और समय–समय पर वह स्वयं भी उन्हें आवश्यक निर्देश देता रहता था, जिससे वह मानवता के श्रेष्ठ गुण अपना सकें। जब शहजादा मुराद मालवा में तथा शहजाद दानियाल इलाहाबाद में सूबेदार नियुक्त किया गये, तब अकबर ने उन्हें विस्तृत निर्देश दिए जो खान–पान, आत्मनियन्त्रण, सामाजिक व्यवहार, उदारता, परिश्रम, अध्ययन, तथा प्रशासकीय कुशलता से सम्बन्धित थे। ये निर्देश अकबरनामा में विस्तार से दिये गये हैं।[7]

पाठशालाएं और मदरसे प्रारम्भिक संस्थायें थी, जाँ बच्चें पढ़ाई आरम्भ करते थे। अकबर ने आदेश दिये कि सर्वप्रथम बच्चों को शब्दों को जोड़ना सिखाया जाये। तत्पश्चात उन्हें नैतिक गीत स्मरण कराया जाए साथ ही इस बात का ध्यान रखा जाए कि वह प्रत्येक कार्य को स्वयं समझना सीखें। अध्यापक केवल उसकी मदद करें।[8] अकबर के समय में हिन्दू विद्यार्थियों को भी मुस्लिम मकतब और मदरसों में दाखिल करना आरम्भ किया गया, जिसके परिणाम स्वरूप 50 वर्ष के अन्दर ही फारसी भाषा के बहुत से हिन्दू विद्वान, इतिहासकार और कवि तैयार हो गए। इनमें से कुछ ने तर्कविद्या में श्रेष्ठता अर्जित की और मदरसों में फारसी भाषा के अध्यापक नियुक्त हो गए। अकबर के समय में शिक्षा का आधार धार्मिक से अधिक धर्मनिरपेक्ष था।[9]

अकबर के एक फरमान से गणित को मदरसो में अनिवार्य विषय बना दिया गया।[10] खगोल विद्या और ज्योतिष की पढ़ाई को भी प्रोत्साहन दिया गया तथा यह नियमित पाठ्यक्रम का भाग बन गए। अकबर के एक फरमान में इसके अध्ययन की सरहाना की गयी है।[11] अबुल फज़ल लिखते हैं कि चिकित्सा शास्त्र दूसरा आवश्यक विषय था और अकबर ने एक फरमान जारी किया था कि लोगो को चिकित्सा शास्त्र पढ़ना चाहिये।[12] आयुर्वेदिक और यूनानी पद्धति को साथ–साथ पढ़ाया जाता था। सरहिंद चिकित्सा विज्ञान के शिक्षण का प्रसिद्ध केन्द्र था।[13] यह व्यवसाय वंशाानुगत था और वह हकीम या वैद्य, जिनके पूर्वज इस क्षेत्र में कार्य कर चुके थे, अच्छे समझे जाते थे। कुछ निपुण हकीमों द्वारा व्यक्तिगत संस्थाओं की स्थापना की गयी, जिसमें वह विद्यार्थियों को चिकित्सा विज्ञान पढ़ाते थे।[14] हिन्दुओं के द्वारा शल्य चिकित्सा से घृणा की जाती थी परन्तु मुसलमानों ने ठीके लगाने एवं शल्य कार्य भी किया।[15] पशु चिकित्सा उस समय जनता के लिये शिक्षा का विषय नहीं था, परन्तु इसकी जानकारी थी। तथिया (ऊँटों की तेल मालिश) और तजरी (उनके नथनों में तेल लगाना) उस समय के ऊँट को बीमारी से बचाव के तरीके थे। शेख बीना उस समय का कुशल सर्जन था जो हाथियों का इलाज करता था।[16]

विज्ञान की पढ़ाई में गणित, भौतिक शास्त्र एवं रसायन शास्त्र पढ़ाया जाता था। लोग विभिन्न धातुओं का उपयोग भी जानते थे।[17] मुसलमान इतिहास की शिक्षा में अधिक रूचि लेते थे। अबुल फज़ल, मुल्ला अब्दुल क़ादिर बदायूँनी, निजामुद्दीन अहमद और आरिफ कान्धारी प्रसिद्ध इतिहासकार थे।

अरबी भारत की जनसाधारण की भाषा नहीं होने से ऐसा आदेश दिया गया कि मकतबों और विद्यालयों में अरबी भाषा और साहित्य पर बल न देकर लाभप्रद विषयों पर जोर दिया जाये।[18] यद्यपि अकबर ने शिक्षा के लिये और अलग से विभाग नहीं खोला था और न ही साम्राज्य भर में विद्यालय और महाविद्यालय, खोले लेकिन उसने विभिन्न प्रकार से शिक्षा के उन्नयन में रूचि ली। साम्राज्य में अनेक पाठशालाएं और मदरसे थे, जिनमें से कुछ सरकारी थे। अधिकांश पाठशालाएं और मदरसे जनता के दान से चलते थे। सामान्यतः प्रत्येक मस्जिद के साथ मकतब होता था, जहाँ बच्चों को प्राथमिक शिक्षा दी जाती थी, और कुरान पढ़ाया जाता था। इसके अतिरिक्त मुस्लिम शिक्षा मदरसों और खानकाहों में दी जाती थी। मुस्लमान शिक्षा के मुख्य केन्द्र आगरा, देहली, लाहौर जौनपुर, गुजरात, सियालकोट और अहमदाबाद थे।[19] अकबर ने प्रारम्भिक शिक्षा के बाद उच्च शिक्षा के लिये फतेहपुर सीकरी, आगरा, दिल्ली आदि में मदरसे स्थापित किये। उसके द्वारा एक भव्य मदरसा फतेहपुर सीकरी में शाही आवास के पास पहाड़ी पर स्थापित किया गया था।[20]

हुमायूँ का मकबरा भी एक समय मदरसे के रूप में उपयोग होता था। स्टीफन लिखता है कि मकबरे की छत पर जो मदरसा था, वह उस समय की विशेष संस्थाओं में से एक था और उसका प्रबन्धक शिक्षित एवं

प्रभावशाली व्यक्ति को बनाया जाता था।[21] अबुल फज़ल द्वारा भी फतेहपुर सीकरी में एक मदरसे की जिसका नाम 'मदरसा–ए–अबुल फज़ल' था, स्थापना की गयी थी। इसके अलावा माहम अनगा द्वारा भी एक मदरसा दिल्ली में स्थापित किया गया था, जिससे एक मस्जिद जुड़ी हुई थी इसे 'खैरूल मंजिल' कहा जाता था।[22]

हिन्दुओं के लिये पाठशालाओं में प्रारम्भिक शिक्षा दी जाती थी। प्रख्यात धार्मिक स्थानों में उच्च शिक्षा के लिये विद्यालय थे, जहाँ धर्मशास्त्र, साहित्य–शास्त्र, ज्योतिष, व्याकरण, दर्शन आदि का अध्यापन किया जाता था। हिन्दू और मुस्लिम दोनों प्रकार की शिक्षा संस्थाओं को अकबर उदारतापूर्वक आर्थिक सहायता देता था। उच्च शिक्षण संस्थाओं में हिन्दू और मुस्लिम दोनों सामान्या रूप से शिक्षा ग्रहण करते थे। बनारस, नाडिया, मुल्तान, थट्टा करहद, मिथिला पाइथान और सरहिंद उच्च हिन्दू शिक्षा के प्रसिद्ध केन्द्र थे। इसके अतिरिक्त मुल्तान में हिन्दुओं द्वारा अनेको स्कूल स्थापित किये गये थे, जहाँ खगोल शास्त्र, ज्योतिष, गणित, एवं चिकित्साशास्त्र जैसे कठिन विषयों की शिक्षा दी जाती थी।

सरहिंद मे आयुर्वेद का प्रसिद्ध स्कूल था, जहाँ से सम्पूर्ण राज्य में वैद्य भेजे जाते थे। हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में भी अकबर के काल में असाधरण उपलिब्धयाँ हुईं। इस समय हिन्दी साहित्य की राम काव्य और कृष्ण काव्य की दो समानान्तर धारायें प्रवाहित हुई, जिन्हें मध्यकाल के कुछ महान कवियों ने समृद्ध किया। इन कवियों में से कुछ कवि ऐसे थे जिनका सम्बन्ध दरबार से नही था और सर्वसाधारण के मध्य रहकर उन्होंने साहित्य सृजन किया था। जैसे तुलसीदास, सूरदास, केशवदास, रसखान और कुंभनदास। इनमे सबसे अधिक उल्लेखनीय गोस्वामी तुलसीदास है जिनका नाम आईन–ए–अकबरी में है और न किसी मुस्लिम या फ़ारसी इतिहासकार की पुस्तक में। राहुल सांकृत्यायन लिखते है कि अब्दुर्रहीम खान खाना तुलसीदास के परिचित और मित्र थे, पर अकबर तक तुलसीदास की कीर्ति क्यों नही पहुँची यह समझ में नही आता। गोस्वामी जी अकबर के समवयस्क थे और अकबर के मरने के चौथाई शताब्दी बाद तक जीते रहे। उनके लिये अकबरी दरबार को श्रेय नही दिया जा सकता लेकिन अकबरी युग के भारत के वह महान उपज थे, इसे स्वीकार करने से कोई इंकार नही कर सकता।[23]

 ISSN No. (P) 0976-5255, (e) 2454-339X
ICRJIFR
IMPACT FACTOR
3.8942

अकबर के समय के दूसरे महाकवि सूरदास थे आईन–ए–अकबरी में उल्लेख है कि सूरदास और उनके पिता बाबा रामदास अकबर के दरबार में गायक थे।[24] जिन कवियों को अकबर के दरबार में सम्मान और संरक्षण मिला, उनके नाम है – अब्दुर्रहीम खानखाना, बीरबल, गंग, नरहरि, महापत्र, तानसेन, चतुर्भुजदास, राजा आसकरण, पृथ्वीराज, राजा टोडरमल, होलराय, मनोहर और जयतराम।

अब्दुरर्रहीम खानखाना, बैरम खाँ के पुत्र थे। पिता की मृत्यु के बाद इनका पालन–पोषण अकबर की देखरेख में हुआ। रहीम संस्कृत, अरबी, फ़ारसी के विद्वान होने के साथ–साथ बृजभाषा तथा अवधी पर भी पूरा अधिकार रखते थे और उन्हें अकबर के नवरत्नों में स्थान प्राप्त था। रामचन्द्र शुक्ल लिखते हैं कि – रहीम का ह्रदय द्रवीभूत होने के लिए कल्पना की उड़ान की अपेक्षा नहीं रखता था। वह संसार के प्रत्यक्ष व्यवहारों में ही अपने द्रवीभूत होने के लिए पर्याप्त स्वरूप पा जाता था।[25]

इनके अलावा अकबर के दरबारी बीरबल ''ब्रह्म'' उपनाम से काव्य रचना करते थे। इनकी काव्य प्रतिभा का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि अकबर ने इन्हें ''कविराय'' की पदवी से विभूषित किया था। इनके लगभग 200 स्फुट पघ मिलते हैं, जिनमे श्रृंगार प्रधान कृष्णलीलाओं, भक्ति ओर नीति का समावेश हैं। इनकी भाषा सरल और अनुप्रासयुक्त है।[26]

अकबर काव्य और साहित्य का प्रेमी ही नही, बल्कि स्वयं भी कभी–कभी कविता करता था। अबुल फज़ल ने आईन–ए–अकबरी में अकबर की बहुत सी सूक्तियों का संग्रह किया है। राहुल सांकृत्यायन लिखते है कि – ''हिन्दी कविता की चर्चा भी अकबर के दरबार में होती थी, पर फ़ारसी बहुतों की मात्रभाषा और चिर–प्रचलित राजभाषा थी, इसके कारण हिन्दी को दरबार में वह स्थान नही मिल सका, जो उसे मिलना चाहिये था। अकबर के मुँ से निकले कुछ पदों को उद्धत किया जाता है, पर उनकी प्रमाणिकता के बारे में क्या कहा जा सकता है? उसकी फ़ारसी कविताएँ अवश्य अधिक प्रामाणिक मालूम होती है। वह चाहता, तो दूसरे महाकवियों से लिखवाकर अपने नाम से प्रकट करवाता जैसा की हमारे इतिहास में अनेक राजाओं ने किया है पर उसको यह बाते पसंद नही थी। उसके फ़ारसी पद्यो में कुछ निम्न है–

गिरिया कर्दम ज–गमत् मुजिबे–खुशहाली शुद्।

रेखतम् खूने–दिल अज–दीद दिलम् खाली शुद्।

(तेरे गम से में रोया, यह ख़शी का कारण हुआ।

आंख से दिल से खून को बहाया मेरा दिल खाली हुआ।)

दोशीन ब–कय मौ–फरोशां।

पैमाने–में ब–जर खरीदम्।

अकनूँ ज–खुमार सरगराम।

जर दादम् व दर्दे–सर खरीदम्।

 ISSN No. (P) 0976-5255, (e) 2454-339X
ICRJIFR
IMPACT FACTOR
3.8942

(रात को शराब बेचने वालो की गली में पैसे से शराब का प्याला ख़रीदा। अब खुमार से मेरा सर चकरा रहा है पैसा दिया और मैंने सर का दर्द खरीदा।)[27]

उस युग में भारतीय बुद्धिजीवियों के लिये सामान्य साहित्य को फ़ारसी में उपलब्ध कराने के लिये अकबर ने स्वयं अपने तत्वधान में एक अनुवाद विभाग की स्थापना की। इस विभाग के अंतर्गत विभिन्न भाषाओं तथा धर्मो में निपुण व्यक्तियों को हिन्दुओ और मुस्लमानों के प्रसिद्ध ग्रन्थों का फ़ारसी में अनुवाद कराने का कार्य सौंपा गया। संस्कृत, अरबी, तुर्की और यूनानी भाषा के अनेक धार्मिक तथा लौकिक ग्रंथो को दरबारी भाषा फ़ारसी में अनुदित किया गया। ऐसा करने में उसका उद्देश्य दोनों जातियों के बुद्धिजीवियों को एक–दूसरे के प्राचीन साहित्य के श्रेष्ठम विचारों से परिचित कराना तथा हिन्दू धर्म और इस्लाम की सही भावनाओ को समझाना था।[28] अनुवाद किये जाने वाले ग्रंथो का चयन एक सुनिश्चित योजना के अनुसार विभाग के लक्ष्य को ध्यान में रखकर किया जाता था। अमीर, दरबारी, अधिकारी आदि अपने लिये इन अनुवादों की नक़ल करा लिया करते थे। अकबर स्वयं इन ग्रन्थो को पढ़वाकर सुनता था और फिर उनको शाही पुस्तकालय मे बड़ी सावधानी से रखवा दिया करता था।

संस्कृत भाषा से अनुदित ग्रन्थ है – सिंहासनबत्तीसी (खिरद अफज़ा) अथर्वेद, रामायण, महाभारत, भगवतगीता, पंचतंत्र, हरवंश पुराण, कथा–सरित्सागर, नलदमयंती आदि। महाभारत का अनुवाद मुल्ला शीरी, नकीब खाँ, हाजी सुल्तान, फैजी और मुल्ला बदाँयूनी ने किया। महाभारत को फ़ारसी में 'रजनामा' (युद्धग्रंथ) नाम दिया। 1591 में शहजादा मुराद को मालवा का सूबेदार नियुक्त किया गया, तब उसके पास महाभारत के फ़ारसी अनुवाद की एक प्रति भेजी गयी तथा उसे अपने चरित्र को इस ग्रन्थ की शिक्षाओं के अनुसार ढालने को कहा गया।[29]

अरबी भाषा के मजमा–उल–बुल्दान, कुरान और समारत–उल–फलसफा को फ़ारसी में अनुदित किया गया। यूनानी भाषा में लिखे ईसाइयो के धार्मिक ग्रन्थ बाइबिल का अनुवाद फ़ारसी में किया गया।[30] अकबर ने विद्वानों से फ़ारसी भाषा का एक प्रामाणिक शब्दकोश तैयार करवाया। इन विद्वानों में ईरान से आंमंत्रित दस्तूर अर्देशिर नामक विद्वान भी था। इस शब्दकोष में प्राचीन फ़ारसी, दारी और पहलवी के अनेकानेक शब्द और मुहावरे थे। जहांगीर के शासनकाल में यह शब्दकोश ''फरहंग–ए–जहांगीरी'' के नाम से प्रकाशित हुआ। संस्कृत मं ग्रन्थ लिखने के कार्य को भी प्रोत्साहन दिया गया।[31]

अकबर ने अपने दरबारी विद्वानो, अमीरों, अधिकारियों, बुद्धिजीवियों तथा स्वयं के लिये राजधानी में एक विशाल पुस्तकालय स्थापित किया। इसमें फ़ारसी, अरबी, यूनानी, तुर्की, संस्कृत आदि विभिन्न भाषाओं में कथा, कहानी, इतिहास, दर्शन, धर्मशास्त्र तथा अन्य शास्त्रों व विज्ञानो पर 24,000 हस्तलिखित ग्रन्थ थे। भाषाओ और ग्रंथो के आधार पर पुस्तको का वर्गीकरण किया गया था। पुस्तकालय कई भागो में विभाजित था। कुछ पुस्तके हरम में रखी जाती थी और हरम के बाहर, परन्तु राजमहल के भीतरी भागो में ही पुस्तके रखी जाती थी।[32] पुस्तकालय की देखरेख के लिये कई अधिकारी और कर्मचारी नियुक्त किये गये थे। गुजरात के युद्ध के बाद अकबर ने एतमाद खाँ के पुस्तकालय को भी प्राप्त कर लिया था। अकबर पुस्तकों का अत्यधिक शौक़ीन था और सदा पुस्तको की खोज में रहता था। उसे युद्धो से भी अनेको पुस्तके प्राप्त हुई। बाहर से प्राप्त हुई पुस्तकों को या तो ऐसे ही रख लिया जाता था या उनका फ़ारसी में अनुवाद कर लिया जाता था।[33]

 ISSN No. (P) 0976-5255, (e) 2454-339X
ICRJIFR
IMPACT FACTOR
3.8942

फ़ारसी की गद्य और पद्य की पुस्तको को प्रसिद्ध चित्रकारों द्वारा सजाया जाता था। इनकी जिल्दसाजी पर भी अत्यधिक मेहनत की जाती थी।[34] अकबर विद्वतापूर्वक ग्रंथो का संग्रह इस पुस्तकालय में करने के लिए और उनकी पूरी देखभाल करने के लिए बड़ा उत्सुक और सावधान रहता था। एक बार जब बदायूँनी ने इस पुस्तकालय का ग्रन्थ 'खिरद अफज़ा' खो दिया, तो अकबर ने उससे काफी पूछताछ की और बहुत नाराज़ हुआ। इस पुस्तकालय का अच्छा उपयोग हो, इसलिये इसकी समुचित व्यवस्था की गयी थी और महल के विभाग का एक महत्वपूर्ण अंग मान लिया था।[35] शाही पुस्तकालय के अतिरिक्त विभिन्न विद्यालयों, मदरसों और खानकाहों में भी पुस्तकालय बने हुए थे। इनके अलावा अब्दुर्रहीम खानखाना, अबुल फज़ल, फैजी, अब्दुल कादिर बदायूँनी बक्शी निजामुद्दीन तथा मुल्ला मुबारक जैसे विद्वानों के भी व्यक्तिगत पुस्तकालय बने हुए थे।[36]

इस प्रकार अकबर के सुधारों से हिन्दुओं और मुसलमानों को परस्पर एक दूसरे के विचारो और संस्कृति को समझने के सुअवसर प्राप्त हुए। विभिन्न वर्गों और सम्प्रदायों के बुद्धिजीवियों के विचारो का परस्पर आदान–प्रदान सुगम हो गया। निःसंदेह हिन्दू मुस्लिम समन्वय की ओर यह एक प्रशंसनीय कदम था।

 ISSN No. (P) 0976-5255, (e) 2454-339X
ICRJIFR
IMPACT FACTOR
3.8942

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *नाथ, नरेन्द्र– प्रमोशन ऑफ लर्निंग अंडर मुस्लिम रूल, लंदन 1961 पृ0 160*
2. *अबुल फजल– आईन ए अकबरी भाग 3, पृ0 385*
3. *अबुल फजल– अकबरनामा भाग 1, पृ0 518*
4. *अबुल फजल– आईन ए अकबरी भाग 1 पृ0 289*
5. *ओझाा, पी एन0– ऐस्पेक्टस ऑफ मेडिवल इण्डियन सोसाइटी एण्ड कल्चर, दिल्ली 1978, पृ0 151*
6. *मिश्र, सुदेश– अकबर, जयपुर–1994 पृ0 143*
7. *अबुल फजल– अकबरनामा भाग 3, पृ0 995*
8. *श्रीवास्तव, एम0पी0–सोसाइटी एण्ड कल्चर इन मेडिवल इण्डिया 1975 पृ0 67*
9. *इस्लामिक कल्चर, क्वाटर्ली अप्रैल 1956 पृ0 115*
10. *अब्दुल कादिर बदायूँनी– मुन्तखब–उत–तवारीख भाग 2, पृ0 363*
11. *अबुल फजल– आईन–ए–अकबरी भाग 1, पृ0 288–89*
12. *वही भाग 1 पृ0 288–89*
13. *मान्सरेट कमेण्टारियस, पृ0 102*
14. *इलिअट एण्ड डॉसन– इण्डिया एज टोल्ड बाई इट्स ओन हिस्टोरियस भाग 2 पृ0 2*
15. *मनूची– स्टोरियो डी मोगोर भाग 2, पृ0 301*
16. *अबुल फजल–आईन–ए–अकबरी, भाग 1, पृ0 154–55*
17. *श्रीवास्तव एम0पी0– सोशल लाइफ अंडर द ग्रेट मुगल्स इलाहाबाद 1978 पृ0 117*
18. *श्रीवास्तव, ए0 एल0– अकबर महान, आगरा 1967 भाग 2, पृ0 307*
19. *मिश्र, सुदेश–पूर्वोक्त, पृ0 143*
20. *अबुल फजल– आईन–ए–अकबरी, भाग 1, पृ0 442*
21. *कारस्टेफन्स–आर्कियोलॉजी ऑफ दिल्ली, पृ0 207*
22. *अबुल फजल– आईन–ए–अकबरी, भाग 2, पृ0 152–53*
23. *सांस्कृत्यान, राहुल– अकबर, इलाहाबाद 1999 पृ0 321*
24. अबुल फजल– आईन–ए–अकबरी, भाग 1, पृ0 612
25. *शुक्ल, रामचन्द्र–हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ0 209*
26. *नगेन्द्र– हिन्दी साहित्य का इतिहास– 1973, पृ0 242*
27. *सांस्कृत्यान, राहुल– अकबर, पृ0 328*
28. *अबुल फजल द्वारा अनूदित महाभारत की प्रस्तावना प्रोसीडिंग्स ऑफ इण्डियन हिस्ट्री कांग्रेस–1950, पृ0 197, 201*
29. *अबुल फजल– अकबरनामा खण्ड 3, पृ0 914*
30. *लूनिया, वी0 एन0– अकबरमहान, आगरा 1972 पृ0 483*
31. *वही पृ0 483*
32. *वही पृ0 483–84*
33. *मेल्सन, जी0 बी0– अकबर, ऑक्सफोर्ड 1896 पृ0 170*
34. *लॉ, एन0 एन0– प्रमोशन ऑफ लर्निंग डयूरिंग मुहम्मडन रूल, पृ0 152–54*

35. *अबुल फजल– आईन–ए–अकबरी, भाग 1, पृ0 109–110*

36. *ओझा, पी0 एन0,– ऐस्पेक्टस ऑफ मेडिवल इण्डियन सोसाइटी एण्ड कल्चर, दिल्ली 1978 पृ0 162*